• कविताएं...

अंतरिक्ष की सैर

नभ के तारे कई देखकर
एक दिन बबलू बोला।
अंतरिक्ष की सैर करें मां
ले आ उड़न खटोला॥
कितने प्यारे लगते हैं
ये आसमान के तारे।
कौतूहल पैदा करते हैं
मन में रोज हमारे॥
झिलमिल झिलमिल करते रहते
हर दिन हमें इशारे।
रोज भेज देते हैं हम तक
किरणों के हरकारे॥
कोई ग्रह तो होगा ऐसा
जिस पर होगी बस्ती।
मां, बच्चों के साथ वहां
मैं खूब करूंगा मस्ती॥
वहां नये बच्चों से मिलकर
कितना सुख पाऊंगा।
नये खेल सिखूंगा मैं,
कुछ उनको सिखलाऊंगा॥

■ त्रिलोक सिंह ठकुरेला

अकड़

अकड़-अकड़ कर
क्यों चलते हो
चूहे चिंटूराम,
गर बिल्ली ने
देख लिया तो
करेगी काम तमाम,
चूहा मुक्का तान कर बोला
नहीं डरूंगा दादी
मेरी भी अब हो गई है
इक बिल्ली से शादी।

■ दीनदयाल शर्मा

• चुटकुले...

टीचर : गोलू, मुझे एक बात बताओ, क्या किसी व्यक्ति को उस काम के लिए सजा मिलनी चाहिए जो उसने किया ही नहीं?
गोलू : (पूरे आत्मविश्वास से) बिल्कुल नहीं, मैम!
टीचर : बहुत अच्छी बात है... वैसे आज मैंने अपना होमवर्क नहीं किया है!
😂😂😂
बेटा : पापा, मुझे बहुत मच्छर काट रहे हैं!
पापा : बेटा, कमरे की लाइट बंद कर दो, मच्छर नहीं काटेंगे।
(बेटे ने लाइट बंद कर दी। तभी एक चमकता हुआ जुगनू कमरे में आ गया।)
बेटा : (रोते हुए) पापा, मच्छर तो बहुत चालाक हैं... अब वो टॉर्च लेकर आ गए हैं!

• जानकारी...

घोड़े पालने का शौक

घोड़े पालने का शौक काफी पुराना है और आज भी देश के कई हिस्सों में लोग घोड़ों को शौक के साथ-साथ सवारी और प्रतियोगिताओं के लिए पालते हैं। हर घोड़ा एक जैसा नहीं होता। अलग-अलग नस्लों की अपनी खासियत होती है। कोई नस्ल तेज दौड़ने के लिए जानी जाती है तो कोई कठिन मौसम और लंबी दूरी तक चलने की क्षमता के लिए। भारत में भी कई देसी नस्लें हैं, जिनकी अपनी अलग पहचान है। अगर आप घोड़ा पालने की सोच रहे हैं या पहले से घोड़े रखते हैं, तो नस्ल की खासियत जानना आपके लिए काफी काम का हो सकता है।

मारवाड़ी घोड़ा राजस्थान की प्रसिद्ध देसी नस्लों में शामिल है। इसकी सबसे खास पहचान इसके अंदर की ओर मुड़े हुए कान हैं। यह नस्ल मजबूत शरीर, फुर्ती और सहनशक्ति के लिए जानी जाती है। पुराने समय में मारवाड़ी घोड़ों का इस्तेमाल युद्ध और लंबी दूरी की सवारी में किया जाता था। आज भी इनका इस्तेमाल सवारी, घुड़सवारी कार्यक्रमों और पारंपरिक आयोजनों में देखने को मिलता है। इसकी शाही बनावट और खास चाल की वजह से घोड़े पालने के शौकीनों के बीच इसकी काफी मांग रहती है।

काठियावाड़ी घोड़े का संबंध गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र से है। यह नस्ल गर्म और सूखे मौसम में रहने के लिए अच्छी तरह अनुकूल मानी जाती है। काठियावाड़ी घोड़े अपनी सहनशक्ति, फुर्ती और मजबूत शरीर के लिए पहचाने जाते हैं। इनके कान भी अंदर की ओर मुड़े हुए दिखाई देते हैं, जिससे इन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। सवारी और घुड़सवारी से जुड़े आयोजनों में इस नस्ल के घोड़ों का इस्तेमाल किया जाता है।

मणिपुरी पोनी आकार में कई दूसरी घोड़ों की नस्लों से छोटी होती है, लेकिन इसकी फुर्ती और सहनशक्ति इसे खास बनाती है। यह नस्ल मणिपुर की पारंपरिक संस्कृति से भी जुड़ी हुई है और खास तौर पर पोलो के इतिहास में इसका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कठिन रास्तों और अलग-अलग परिस्थितियों में काम करने की क्षमता के कारण इसे मजबूत नस्लों में गिना जाता है। छोटे कद का होने के बावजूद इसकी तेजी इसे खास बनाती है।

स्पीति घोड़ा हिमाचल प्रदेश के स्पीति और आसपास के पहाड़ी क्षेत्रों से जुड़ा है। यह नस्ल ठंडे मौसम और ऊंचाई वाले कठिन इलाकों में रहने के लिए अनुकूल मानी जाती है। स्पीति घोड़े आकार में बहुत बड़े नहीं होते, लेकिन पहाड़ी रास्तों पर चलने की क्षमता और मजबूत शरीर के कारण स्थानीय लोगों के लिए काफी उपयोगी रहे हैं। कठिन मौसम में भी काम करने की क्षमता इस नस्ल की सबसे बड़ी खासियतों में से एक है।

अगर बात तेज दौड़ने वाले घोड़ों की हो तो थरोल्डब्रेड नस्ल का नाम जरूर आता है। इन घोड़ों को खास तौर पर रेसिंग और घुड़दौड़ के लिए जाना जाता है। इनका शरीर एथलेटिक होता है और सही ट्रेनिंग के साथ ये काफी तेज दौड़ सकते हैं।

एक दिन की बादशाहत

दोनों घंटों बैठकर इन पाबंदियों से बच निकलने को तरकीबें सोचा करते। उन दोनों से तो सारे घर को दुश्मनी हो गई थी।

लिहाजा दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई और अब्बा की खिदमत में एक दरखास्त पेश की कि एक दिन उन्हें बड़ों के सारे अधिकार दे दिए जाएँ और सब बड़े छोटे बन जाएँ!

'कोई जरूरत नहीं है ऊधम मचाने की!' अम्मी ने अपनी आदत के अनुसार डॉट पिलाई...

'आरिफ...सलीम...चलो, फौरन सो जाओ,' अम्मी की आवाज ऐन उस वक्त आती थी, जब वे दोस्तों के साथ बैठे कव्वाली गा रहे होते थे। या फिर सुबह बड़े मजे में आइसक्रीम खाने के सपने देख रहे होते कि आपा झिंझोड़कर जगा देतीं 'जल्दी उठो, स्कूल का वक्त हो गया।'

दोनों की मुसीबत में जान थी। हर वक्त पाबंदी, हर वक्त तकरार। अपनी मर्जी से चूँ भी न कर सकते थे। कभी आरिफ को गाने का मूड आता, तो भाई-जान डाँटते 'चुप होता है या नहीं? हर वक्त मेंढक की तरह टर्राए जाता है!'

बाहर जाओ, तो अम्मी पूछती 'बाहर क्यों गए?'अंदर रहते, तो दादी चिल्लाती 'हाय, मेरा दिमाग फटा जा रहा है शोर के मारे! अरी रजिया, जरा इन बच्चों को बाहर हाँक दे!' जैसे बच्चे न हुए मुर्गी के चूजे हो गए!

दोनों घंटों बैठकर इन पाबंदियों से बच निकलने को तरकीबें सोचा करते। उन दोनों से तो सारे घर को दुश्मनी हो गई थी। लिहाजा दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई और अब्बा की खिदमत में एक दरखास्त पेश की कि एक दिन उन्हें बड़ों के सारे अधिकार दे दिए जाएँ और सब बड़े छोटे बन जाएँ!

'कोई जरूरत नहीं है ऊधम मचाने की!' अम्मी ने अपनी आदत के अनुसार डॉट पिलाई। लेकिन अब्बा जाने किस मूड में थे कि न सिर्फ मान गए बल्कि यह इकरार भी कर बैठे कि कल दोनों को हर किस्म के अधिकार मिल जाएँगे।

अभी सुबह होने में कई घंटे थे कि आरिफ ने अम्मी को झिंझोड़ डाला 'अम्मी, जल्दी उठिए नाश्ता तैयार कीजिए!'

अम्मी ने चाहा एक झापड़ रसीद करके सो रहें, मगर याद आया कि आज तो उनके सारे अधिकार छीने जा चुके हैं।

फिर दादी ने सुबह की नमाज पढ़ने के बाद दवाएँ खाना और बादाम का हरीरा पीना शुरू किया, तो आरिफ ने उन्हें रोका 'तौबा है, दादी! कितना हरीरा पिएँगी आप...पेट फट जाएगा!' और दादी ने हाथ उठाया मारने के लिए।

नाश्ता मेज पर आया तो आरिफ ने खानसामा से कहा 'अंडे और मक्खन वग़ैरह हमारे सामने रखो, दलिया और दूध-बिस्कुट इन सबको दे दो!'

आपा ने कहर-भरी नजरों से उन्हें घूरा, मगर बेबस थी क्योंकि रोज की तरह आज वह तर माल अपने लिए नहीं रख सकती थीं।

सब खाने बैठे, तो सलीम ने अम्मी को टोका 'अम्मी, जरा अपने दाँत देखिए, पान खाने से कितने गंदे हो रहे हैं!'

'मैं तो दाँत माँज चुकी हूँ,' अम्मी ने टालना चाहा!

'नहीं, चलिए, उठिए।' अम्मी निवाला तो? चुकी थी, मगर सलीम ने जबरदस्ती कंधा पकड़कर उन्हें उठा दिया।

अम्मी को गुसलखाने में जाते देखकर सब हँस पड़े, जैसे रोज सलीम को जबरदस्ती भगा के हँसते थे।

फिर वह अब्बा की तरफ मुड़ा 'जरा अब्बा की गत देखिए! बाल बढ़े हुए, शेव नहीं की, कल कपड़े पहने थे और आज इतने मैले कर डाले! आखिर अब्बा के लिए कितने कपड़े बनाए जाएँगे!'

यह सुनकर अब्बा का हँसते-हँसते बुरा हाल हो गया। आज ये दोनों कैसी सही नक्ल उतार रहे थे सबकी! मगर फिर अपने कपड़े देखकर वह सचमुच शर्मिंदा हो गए।

थोड़ी देर बाद जब अब्बा अपने दोस्तों के बीच बैठे अपनी नई ग़ज़ल लहक-लहक कर सुना रहे थे, तो आरिफ़ फिर चिल्लाने लगा 'बस कीजिए, अब्बा! फौरन ऑफिस जाइए, दस बज गए!'

'चु...चु...चोप...' अब्बा डाँटते-डाँटते रुक गए। बेबसी से ग़ज़ल की अधूरी पंक्ति दाँतों में दबाए पाँव पटकते आरिफ के साथ हो लिए।

-जारी

• रोचक...

सुरक्षित पेयजल

फिनलैंड और आइसलैंड ने सुरक्षित पेयजल के मामले में पूरे अंक हासिल कर पहला स्थान पाया है। इनके ठीक पीछे यूनाइटेड किंगडम और स्विट्जरलैंड का नाम आता है। दूसरी तरफ, सीमित प्राकृतिक स्रोत होने के बाद भी सिंगापुर ने अत्याधुनिक तकनीक की बदौलत पानी के रीसाइकलिंग और डिसैलिनेशन का बेहतरीन ढांचा खड़ा किया है। अगर ताजे पानी के विशाल भंडारों की बात करें तो कनाडा के पास पूरी दुनिया के कुल ताजे जल संसाधनों का लगभग पांचवां हिस्सा मौजूद है, जो उसकी पर्यावरण नीति को मजबूती देता है। यूरोपीय देशों ने अपने कड़े नियमों और प्राकृतिक संसाधनों की बदौलत जल शुद्धता के क्षेत्र में विश्व स्तर पर नया मुकाम हासिल किया है। जब बात जल व्यापार की आती है, तो मुख्यभूमि चीन बोतलबंद पानी, बर्फ और प्राकृतिक जल का दुनिया में सबसे बड़ा निर्यातक देश बनकर उभरता है। वहीं दूसरी ओर वर्चुअल वॉटर यानी अप्रत्यक्ष रूप से पानी के निर्यात के मामले में भारत पूरी दुनिया में सबसे आगे खड़ा है।

• दिल्ली यूनिवर्सिटी

दिल्ली यूनिवर्सिटी की स्थापना 1922 में दिल्ली यूनिवर्सिटी एक्ट के तहत हुई थी। यह कानून तत्कालीन केंद्रीय विधान सभा ने पारित किया था। विश्वविद्यालय का गठन 1 मई 1922 को हुआ। यानी दिल्ली यूनिवर्सिटी करीब 104 वर्ष पुरानी हो चुकी है। इसे तत्कालीन ब्रिटिश भारत की केंद्रीय विधायी व्यवस्था के जरिए स्थापित किया गया था। यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली की आधिकारिक जानकारी के मुताबिक, इसे उस समय एक यूनिटरी, टीचिंग और रेजिडेंशियल यूनिवर्सिटी के रूप में स्थापित किय गया था।